India ECHOES
ONE WORLD ONE HUMANITY

गुरुदेव की यात्रा

गुरुदेव का मलेशिया का दौरा, २२ से २७ जून २०११

गुरुदेव २२ जून की दोपहर को सिंगापुर से मलेशिया पहुँचे। वे हवाई अड्डे से सीधे क्लाँग में नवनिर्मित मलेशियन आश्रम का उद्घाटन करने के लिये गये। गुरुदेव आगमन के समय बहुत प्रफुल्लित थे, उन्होंने उपस्थित २०० अभ्यासियों का अभिवादन किया और तभी सत्संग भी कराया। वे उस रात आश्रम में ही रुके, अगले दिन सुबह वे गोष्ठी स्थल पर 'प्रीमियर होटल' में सभी अभ्यासियों के साथ सम्मिलित हुये। यह स्थल आश्रम से १० मिनट की दूरी पर था। अपनी शारीरिक परेशानियों और होटल में उनकी आयु की आवश्यकतानुसार सुविधाओं के ना होने के बावज़ूद भी गुरुदेव ने गोष्ठी के कार्यकाल तक वहीं रहने का निश्चय किया।

२३ जून को शाम के सत्संग का समय ५ बजे निर्धारित था, लेकिन गुरुदेव अभ्यासियों से मिलने की उत्सुकता और गोष्ठी की व्यवस्थाओं का निरीक्षण करने के लिये ४ बजकर १५ मिनट पर ही वहाँ उपस्थित थे। गुरुदेव ने अभ्यासियों की प्रसन्नता को बढ़ाते हुये सभी प्रात:कालीन और सायंकालीन सत्संग कराये और लिफ्ट से ध्यान-कक्ष की ओर जाते हुये उन्होंने बच्चों का प्रेमपूर्वक अभिवादन किया। गोष्ठी के बीच-बीच में वार्तायें, बैठकें और सांस्कृतिक कार्यक्रम रखे गये थे। गोष्ठी का विषय, "एक हृदय, एक मानवता" था। इस विषय के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुये पाँच वक्ताओं, भाई कृष्णा, सन्तोष खानजी, कमलेश पटेल, काम्बिज और सतबीर ने सत्रों को रोचक और विचारोत्तेजक बनाया, जिनमें गुरुदेव स्वंय सम्मिलित हुए।

गुरुदेव ने २६ जून को रविवार की सुबह मलेशियन आश्रम में अन्तिम सत्संग कराया और उस दिन सभी मलेशियन अभ्यासियों को व्यक्तिगत सिटिंग दी गयी। अगले दिन सुबह गुरुदेव चेन्नई के लिये रवाना हो गये।

यात्रा के दौरान गुरुदेव के अनऔपचारिक वार्तालाप में से कुछ उद्धरण:

- गुरुदेव ने कहा कि वे हमेशा खुश रहते हैं क्योंकि उन्हें कुछ भी संदेह या अभिलाषा नहीं है– ये दोनो चीजें लोगों को दुखी बनाती हैं।
- जब एक अभ्यासी ने गुरुदेव से पूछा कि लोगों से मिलने के लिये उनके पास कितना समय है, तो उन्होंने स्पष्ट उत्तर दिया, "मैं हर समय सब के लिये उपलब्ध हूँ।"
- बाबूजी महाराज ने कहा है कि मनुष्य नहीं जानते कि प्रेम क्या है। प्रेम केवल ईश्वर और प्राणी के बीच में ही हो सकता है, ईश्वर द्वारा निर्मित प्राणियों के बीच में नहीं। प्राणियों के बीच में केवल स्नेह और आपसी निर्भरता है, जिसे गलती से प्रेम कहा जाता है।
- कोई भी बिना पीड़ा के प्रेम नहीं कर सकता। प्रेम का अर्थ पीड़ा है। यदि पीड़ा नहीं है तो प्रेम भी नहीं है।
- परमानंद इस संसार से सम्बन्धित कोई वस्तु नहीं है, यह एक अवस्था है। हर्ष अवस्था नहीं है, बल्कि यह एक अनुभव है जैसे कि सुख। प्रेम एक व्यक्ति और ईश्वर के सम्बन्ध का ऐसा गुण है, जैसा प्रेम एक माँ और उसके बच्चे के बीच में होता है।

खंड ४, अंक ५ सितंबर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

चेन्नई, २७ जून से २० जुलाई, २०११

चेन्नई हवाई अड्डे पर गुरुदेव का स्वागत बड़ी संख्या में उपस्थित अभ्यासियों ने किया। वहाँ से वे सीधे मणपाक्कम आश्रम में गये। अपनी कॉटेज में पहुँचकर उन्होंने कहा कि, "मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि मैं ऊर्जास्त्रोत से जुड़ गया हूँ और मैं फिर से ऊर्जावान हो गया हूँ।"

१ जुलाई को गुरुदेव को कुछ विवाह सम्पन्न कराने थे, उससे कुछ दिन पहले उन्होंने पूछा, "क्या आज कुछ शादियाँ होनी हैं," तो उन्हें बताया गया कि उस दिन नहीं बल्कि शुक्रवार का दिन निर्धारित है। तब गुरुदेव ने कहा, "बहुत लम्बे समय से हमने ध्यान कक्ष में सत्संग नहीं किया है, ठीक?" और उन्होंने कहा कि वे सत्संग करायेंगे। यह एक आकस्मिक निर्णय था और वे अपने सुबह के कार्य जैसे, दो प्रशिक्षकों को तैयार करना, अपने ई-मेल देखना, और नाश्ता करने के बाद सत्संग के लिये तैयार हो गये। गुरुदेव को अपने शयनकक्ष और कार्यालय के बीच तेजी से चलते हुये देखना आश्चर्यजनक था, ऐसा लग रहा था कि उन्हें बहुत सारे कार्य करने थे।

एक सुबह, एक भाई ने आकर गुरुदेव को सूचित किया कि उन्हें एक महत्वपूर्ण बैठक में भाग लेने के लिये बाहर जाना है। गुरुदेव ने उनको यह कहते हुये जल्दी जाने के लिये कहा कि, "बुद्धिमानी हमेशा जल्दी पहुँचने में है, देरी मे नहीं।"

वहाँ आये हुए एक दम्पत्ति ने गुरुदेव को बताया कि उन्होंने एक शिशु को गोद लिया है। वे यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुये और उन्होंने कहा, "मुझे उन लोगों से प्रेम है, जो बच्चों को गोद लेते हैं। इस संसार में बहुत सारे बच्चें अनाथ है और मैं हमेशा इसके लिये सोचता हूँ। लेकिन किसी भी परिस्थिति में आपको बच्चे को यह नहीं बताना चाहिए कि वह गोद लिया गया है। यहाँ तक कि इतनी छोटी उम्र में भी आपको नहीं कहना चाहिए, क्योंकि यह बात किसी न किसी रुप में शिशु के अन्दर अंकित हो जाती है। शिशु के साथ अपने बच्चे जैसा बर्ताव करो।" उन्होंने किसी को बच्चे की देखरेख करने के लिये कहा, जिससे कि वे दम्पत्ति सत्संग में सम्मिलित हो सकें।

गुरुपूर्णिमा– शुक्रवार, १५ जुलाई २०११

गुरुदेव प्रात:काल बहुत जल्दी तैयार हो गये थे। सबसे पहले उन्होंने आश्रम में नवनिर्मित सभा भवन और पुस्तकालय का उद्घाटन किया। वहाँ से वे सीधे ध्यानकक्ष की ओर गये, और ठीक ७ बजे वे सुबह का सत्संग कराने के लिये वहाँ उपस्थित थे। ध्यान कक्ष पूरी तरह से भरा हुआ था और निकटवर्ती आवास-गृहों की छतों पर भी अभ्यासीं बैठे हुये थे।

शाम के समय भाई गणेश और भाई कुमारेश ने ध्यान कक्ष में वायलिन पर संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। प्रारम्भ में गुरुदेव ने इस कार्यक्रम को सी सी टी वी के द्वारा देखा, लेकिन जब कार्यक्रम बहुत ही सम्मोहक और रोचक हो गया, तब वे कक्ष में ही आ गये। उन्हें वहाँ देखकर अभ्यासियों और संगीतकारों की प्रसन्नता और भी बढ़ गयी। यह एक बहुत ही स्मरणीय रात थी, एक पूर्णिमा की रात को गुरुदेव अभ्यासियों के साथ कार्यक्रम का आनन्द ले रहे थे। यह वास्तव में इस शुभ दिन का भव्य समापन था।

खंड ४, अंक ५ सितंबर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

तिरुपूर, २६ से २९ जुलाई २०११

२५ जुलाई को जन्मोत्सव समाप्त हुआ और मालिक ने २९ तक तिरुपूर में रुकने का निर्णय लिया। इतने बड़े उत्सव के बाद मालिक थके हुए थे और उन्हें आराम की आवश्यकता थी। वापस लौटने से पहले कुछ अभ्यासी मालिक से मिलना चाहते थे अतः जितना उनके स्वास्थ्य ने उनका साथ दिया, वे अभ्यासियों से मिले। एक वाक्य में मालिक ने कहा "उन सभी को जिनसे मैं मिल रहा हूँ और जिनसे मैं नहीं मिला, मैं जो भी दे सकता था वह मैं पहले ही दे चुका हूँ।"

अभ्यासियों के एक समूह से मालिक ने कहा, "जब आप ऐसे भंडारे में आते हैं तो कृपया कुछ दिन और रुकिये और वापस जाने की जल्दी मत कीजिये। कृपया शांत होकर, जीवन की भाग दौड़ कम करके, तनाव रहित होकर, जितने समय तक आप से हो सके इस वातावरण में रहिये।" वातावरण के बारे में बात करते हुए एक अभ्यासी ने कहा टेन्ट निकाले जा रहे हैं, जगह खाली दिखाई दे रही है, यह देख कर बुरा लगता है। मालिक ने कहा, "मैं २४ की शाम से ही ऐसा अनुभव कर रहा हूँ जब अभ्यासियों का पहला समूह वापस जाने के लिए रवाना हो रहा था।"

जब एक अभ्यासी ने मालिक को उत्सव में कार्य करने का सौभाग्य प्रदान करने के लिये धन्यवाद दिया तब मालिक ने उत्तर, "वे लोग जो काम करना चाहते हैं, काम उन तक पहुँचने का मार्ग ढूँढ लेता है"।

चेन्नई – २९ जुलाई २०११ से १५ अगस्त २०११

मालिक २९ जुलाई को चेन्नई पहुंचे और सीधे मणपाक्कम आश्रम गये। उनके वहां पहुँचते ही उनकी दिनचर्या प्रारंभ हो गई।

मालिक 'सहजमार्ग का इतिहास' विषय पर वार्ता देने की नई परियोजना में व्यस्त रहे हैं। उन्होंने तिरुपूर में एक कथन किया था "कि जब कोई जीवित होता है तो हम विस्तार में जाने की इच्छा नहीं रखते हैं, और बहुत सारी जानकारी हमेशा के लिये खो जाती है।" उन्होंने कुछ अभ्यासियों द्वारा विभिन्न देशों में सहज मार्ग के इतिहास की जानकारी एकत्रित करने की पहल की सराहना की। यूरोप वासियों ने मालिक का यूरोप में सहज मार्ग के इतिहास विषय पर साक्षात्कार लिया। २ से ५ अगस्त तक वे 'गायत्री' में रुके और ६ अगस्त की सुबह मणपाक्कम लौटे।

२ अगस्त को उन्होंने गायत्री में लगभग १५० विदेशी अभ्यासियों को रात्रि भोज के लिये आमंत्रित किया। मालिक के परिवार वाले एक आदर्श मेजबान थे जो यह सुनिश्चित कर रहे थे कि प्रत्येक ने भोजन कर लिया है। एक अलग बात ध्यान में आई कि मालिक पर उनकी उम्र का असर कोई भी देख सकता था। उन्हें कुर्सी पर बैठने और उठने में कठिनाई हो रही थी और उन्हें इस अवस्था में देखना और भी कठिन था। एक बार उन्हें कुर्सी से उठने में संघर्ष करते देख कुछ अभ्यासियों ने उनकी मदद करने की कोशिश की और तब उन्होंने कहा वे मदद नहीं चाहते, उन्होंने प्रयास किया और वे स्वयं ही उठ खड़े हुए।

जब मालिक ६ अगस्त को मणपाक्कम वापस आये, मुंबई से आये अभ्यासियों के एक समूह ने भविष्य में आने वाली ज़मीन की परियोजना के बारे में विस्तार से बताया और मालिक ने बडी उत्सुकता से उसे सुना। जब एक अभ्यासी भाई ने कहा कि परियोजना आधी हो चुकी है पूरी नहीं हुई है तब मालिक ने हिन्दी कहावत कही "कि जब हाथी की सूंड दिखाई देने लगे तो पूँछ भी अवश्य आयेगी।

एक रात को रात्री भोज के बाद एक बहन ने मालिक से कुछ समय मांगा तब उन्होंने कहा "आप देख सकती हैं कि अब मैं बहुत थक चुका हूँ। आपको यह देखना चाहिये कि मैं कैसा महसूस कर रहा हूँ और फिर अपना अनुरोध करना चाहिये।" यह सभी के लिये एक सबक था।

मालिक ने रुचि लेने के बारे में कहा, "किसी भी क्षेत्र में पहला कदम होता है रुचि लेना, बाबूजी महाराज ने सहज मार्ग के बारे में भी यही कहा है कि रूचि लो।" उन्होंने कहा कि हमे रुचि लेने के लिये, इसे हमारा हिस्सा बनाना ही होगा, जिसका मतलब है कि हमें मालिक, मिशन, और पद्धति को अपना बनाना होगा।

मणपाक्कम आश्रम में १३ और १५ अगस्त को आयोजित केन्द्र प्रभारी एवं ज़ोन प्रभारी की बैठक में उपस्थित होकर उद्घाटन एवं समापन के समय भाषण देकर मालिक ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर, मणपाक्कम आश्रम में ध्यान कक्ष के सामने भाई ए.पी.दुरई ने लगभग १५० अभ्यासियों और बच्चों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया।

आश्रम की जमीन का पन्जीकरण करने के लिये मालिक १६ तरीख को दिल्ली के लिये रवाना हुए। फिर वे १८ तरीख को हैदराबाद के लिये रवाना हुए ताकि वहाँ की नई परियोजना की ज़मीन का पन्जीकरण करा सकें।

खंड ४, अंक ५ सितंबर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

दक्षिण भारत के केन्द्र एवं क्षेत्र प्रभारीयों की कार्यशाला, चेन्नई, १३–१५ अगस्त २०११

आन्ध्र–प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु के केन्द्र एवं क्षेत्र प्रभारीयों के लिये एक कार्यशाला १३–१५ अगस्त के बीच मणपाक्कम में आयोजित की गयी। मालिक द्वारा संचालित सत्संग और उसके बाद भाषण से कार्यशाला की शुरूआत हुई। अपने भाषण में मालिक ने जोर दिया कि प्रशिक्षक मिशन की धमनी/रक्तवाहिनी हैं और वे मालिक के कार्य को आगे बढ़ाते है। उन्होंने संकेत दिया कि बाबूजी दक्षिण भारत आये और प्राणाहुति दी और उसके फल आज हम २० वर्षों के बाद देख रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षकों को कार्य को गंभीरता से लेना चाहिये और समर्पण के साथ सेवा करनी चाहिये, और जब वे सेवा करते हैं, उनके पास मालिक के जैसा बनने का अवसर है।

इसके बाद भाई कृष्णा का भाषण था जिसमें उन्होंने जी.एस.टी (विश्वस्तरीय सेवा समिति) का परिचय दिया । उन्होंने कहा कि प्रशिक्षकों को आध्यात्मिक कार्य पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिये और प्रशासनिक कार्य स्वंय–सेवकों को सौंप देना चाहिये । इसके बाद जी.एस.टी के कुछ सदस्यों ने अपने मूल विभागों के बारे में प्रस्तुति दी, जैसे आध्यात्मिक कार्यक्रम विकास, आध्यात्मिक प्रशिक्षण व्यवस्था, निरंतर सुधार, सदस्य सेवाएं, समुदाय विकास, अचल संपत्ति और कार्य प्रचालन । इन प्रस्तुतियों के बाद एक प्रश्नोत्तर सत्र हुआ। क्षेत्र और ज़ोन प्रभारीयों ने देर तक काम कर के रूपरेखा तैयार की कि किस तरह वे अपने केन्द्रों में इन सेवाओं को प्रदान करेंगे।

अंतिम दिन भाई राजगोपालन ने दोहराया कि प्रशिक्षक के कार्य को कैसे आगे बढ़ाना चाहिये। सारे क्षेत्र और कुछ महत्वपूर्ण केन्द्रों को अगले वर्ष की कार्य योजना प्रस्तुत करने के लिये बुलाया गया। मालिक ने कार्यशाला का समापन अपने भाषण के साथ किया और कहा कि सबसे पहले हमें अच्छे मनुष्य में परिवर्तित होना चाहिये। उन्होंने कहा कि यद्यपि आप सब जी.एस.टी के समर्थक हैं, मैं आई.एस.आई (इंडिविजुअल सर्विंग इंडिविजुअल – व्यक्ति के द्वारा व्यक्ति की सेवा) का समर्थक हूँ। मनुष्य बने, सामने वाले व्यक्ति से प्रेम से मिले और पूरे दिल से उसकी सेवा करे। आप जब अंदर से साफ हैं, तभी आप दूसरे की सेवा कर सकते हैं। आप अभ्यासी का ख़्याल रखें और मालिक आपका ख़्याल रखेंगे।

अफ़्रीका के अभ्यासियों के लिये सेमिनार

अफ़्रीकी देशों के लगभग ६० अभ्यासियों के लिये आयोजित पहला सेमिनार १६–२२ जुलाई को मणपाक्कम और उसके बाद तिरुपूर में आयोजित किया गया । भाषणों, व्यक्तिगत सिटिंग, सत्संग और कार्यशालाओं से भरपूर यह एक सप्ताह का गहन कार्यक्रम अफ़्रीकी भाईयों और बहनों की ज़रुरतों और आवश्यक्ताओं को ध्यान में रखते हुये बनाया गया था। ज़्यादातर प्रतिभागियों ने भारत आने और मालिक से पहली बार मिलने के लिये महीनों बचत की थी । १६ को मालिक ने सत्संग संचालित किया और भाषण दिया । उनके अगाध भाषण से सब प्रभावित हुये, जो यद्यपि अफ़्रीकी लोगों पर केन्द्रित था पर जो निःसंदेह संपूर्ण मानव–जाति के लिये महत्वपूर्ण है ।

उन्होंने कहा की अफ़्रीका के देश नहीं परंतु ह्रदय 'काले' हैं । कबायली रिति–रिवाज़ और अंधविश्वास को पूरी तरह से ख़त्म करना होगा । उन्होंने वहाँ मौजूद लोगों से इस चुनौती का निडरता से सामना करने और लोगों के दिलों को 'प्रकाश' से भरने के लिये प्रेरित किया । परिवर्तन लाने का एक ही तरीका है – लोगों में रूपांतरण लाओ जिससे एक विश्व, एक मानवता संभव हो ।

भाई कृष्णा का "अनेकता में एकता", भाई राजगोपालन का 'सहज मार्ग की विशिष्टता' और भाई ए.पी. दुरई का 'कर्तव्य और जिम्मेदारी' पर दिये गये भाषण प्रेरणापद और प्रोत्साहित करने वाले थे ।

सेमिनार के ज़्यादातर प्रतिभागी मणपाक्कम से तिरुपूर बस से गये । मालिक के निर्देशानुसार वे दोपहर के भोजन के लिये नत्रामपल्ली आश्रम और शाम के नाश्ते के लिये कृष्णगिरी आश्रम में रूके । इन भाईयों और बहनों को प्यार से भोजन कराया गया और इन आश्रमों को देखने का अनुभव सबके लिये एक अनूठा सीखने का अनुभव रहा ।

तिरुपुर में भाई जेम्स एवं भाई माइकल ने अपनी वार्तायें दी। गुरुदेव ने अपनी समीक्षात्मक वार्ता में कहा, "हमारे यहाँ विभिन्न भाषाएं हैं परन्तु

खंड ४, अंक ५ सितंबर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

जब हमारे बीच प्यार होता है तब भाषा कोई समस्या नहीं होती है, आँखे बोलती हैं, है कि नहीं?...अत: हम मानव होने के नाते मानव जैसे रहें और ईश्वर ने जो हमें दिया है मानवता – उसका आनन्द प्राप्त करें। मानवता अर्थात प्यार करना, मिल–बाँट कर रहना, एक दूसरे का ख्याल रखना और इन सबसे ऊपर रोटी को न काटना। इससे मेरा आशय है कि मानवता की रोटी। और यह सिर्फ सैद्धांतिक रुप में नहीं वरन व्यावहारिक रुप में हमारे जीवन में आनी चाहिए यह स्मरण करते हुए कि ईश्वर उसकी भाषा के माध्यम से हमसे कह रहा है। उसकी भाषा क्या है? मौन – हृदय से हृदय तक, मस्तिष्क से मस्तिष्कतक नहीं।"

प्रत्येक अभ्यासी ने सेमिनार से इस भावना व संकल्प से भरे हुए हृदय से विदा ली कि वे गुरुदेव के संदेश को अपने हृदय में अवशोषित कर उसे विकसित एवं चमकने देंगे, ताकि यह प्रकाश प्रत्येक मानव को स्पर्श कर सके।

गुरुदेव का जन्म दिवस समारोह भारत के विभिन्न केन्द्रों में

कोलकता में लगभग २७५ अभ्यासी एवं बच्चे कार्यक्रम में उपस्थित हुए। बहुत ही प्रेमभाव से भक्ति–पूर्ण गीत गाए गये और स्वल्पाहार के पश्चात हिंदी में "अनुशासन" विषय पर गुरुदेव की वार्ता के प्रसारण के पश्चात एक डी.वी.डी दिखाई गई जिसमें गुरुदेव की विदेश यात्रा के छायाचित्र समाहित थे। साधना के विभिन्न पहलुओं पर प्रश्न पूछे गये, जिनके बहुत ही उत्साह पूर्वक तरीके से, यहाँ तक कि नये अभ्यासियों ने भी, उत्तर दिए। गुरुदेव की जीवनी "यादों की गलियों" पर आधारित प्रश्नावली आयोजित की गई। दोपहर भोजनोपरांत सभी अभ्यासियों ने शाम के सत्संग तक मौन स्थिति को बनाये रखकर आश्रम के आध्यात्मिक वातावरण को अपने हृदय में अवशोषित करते हुए विश्राम किया।

जोधपुर में, गुरुदेव के जन्मदिवस पर लगभग १५० अभ्यासियों व बच्चों ने तीन दिवसीय कार्यक्रम में भाग लिया। ध्यानकक्ष को सफाई के पश्चात बहुत ही भवय तरीके से सजाया गया था। इस अवसर पर अत्यंत प्रेम एवं भक्ति भाव से भजन गाये गए। साधना के विभिन्न आयामों पर बच्चों द्वारा लघुनाटिका अभिनीत की गई। गुरुदेव की वार्ताओं के डी.वी.डी भी प्रदर्शित किये गए। सभी अभ्यासियों ने गुरुदेव के प्रति, अपने जीवन की वास्तविक स्थितियों से संबद्ध करते हुए प्रत्येक के जीवन में परिवर्तन में गुरुदेव की भूमिका को महसूस करते हुए, अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। सभी अभ्यासी आध्यात्मिक उर्जा से पुनरोजित हो अपने अपने घर इस संदेश को लेकर वापस गये कि गुरुदेव के प्रति श्रद्धाभाव ,विश्वास एवं समर्पण उन्हें जीवन में आने वाली परेशानियों व चुनौतियों का सामना करने की शक्ति प्रदान करेगा।

भीलवाड़ा में इस अवसर पर विषय "प्रेम में अनुशासन" था। गुरुदेव की कहावतों पर आधारित पोस्टर दीवारों पर प्रदर्शित किये गये थे। सुबह के सत्संग के पश्चात भजन, एक नाटक की प्रस्तुति तथा एक डी.वी.डी का प्रदर्शन किया गया।

जयपुर में गुरुदेव के जन्मदिवस पर साधना के विभिन्न आयामों पर वार्ता तथा परिचर्चा हुई। उसके पश्चात बच्चों द्वारा सांस्कृतिक गतिविधियों पर कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए जिसे सभी उपस्थित जनों के हृदय को अभिभूत कर दिया। लगभग ३०० अभ्यासी एवं बच्चे इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

जोधपुर

जयपुर

खंड ४, अंक ५ सितंबर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

सेवा का महत्त्व

"गुरुदेव से प्रेम करना असंभव नहीं परंतु मुश्किल जरूर है, "ऐसा श्रद्धेय गुरुदेव ने १० जनवरी,२०१० के दिन मिशन के कार्यकर्त्ताओं को संबोधित करते हुए कहा था। वे उसी बात को दोहरा रहे थे जिसे बाबूजी महाराज ने वर्षों पूर्व सिखाया था कि प्रेम एक ऐसी बात है जिसके बारे में हम कुछ नहीं जानते। केवल सेवा के माध्यम से ही हम प्रेम विकसित कर सकते हैं।

स्वयंसेवकों का पंजीकरण–डेस्क

सेवादान करने के लिये स्वयंसेवकों की डेस्क पर आने वाले अन्य स्वयंसेवकों का सतत एवं जोरदार प्रवाह दिखाई दे रहा था और लगभग सभी विभागों जैसे सुरक्षा, रसोई, भोजनालय, उपाहार–गह, ध्यान–कक्ष, स्वास्थ्य, परिवहन–व्यवस्था, सफाई–व्यवस्था और सामान्य देखरेख के काम के लिए कार्यकर्ताओं की कोई कमी नहीं थी। तिरुपूर और आसपास के केन्द्रों के अभ्यासियों ने सभी अभ्यासियों की मदद की और पूरी कालावधि में उनकी सुविधा के लिए निरन्तर काम किया।

उत्सव की पूर्व–तैयारियां

- उत्सव के दो महीने पहले से ही भारत के विभिन्न भागों से उत्साही स्वयंसेवक उत्सव–स्थल पर आने लगे और उत्सव स्थल की तैयारियों मे भागीदारी करते हुए दिखाई दिए।
- जून के प्रथम सप्ताह में केरल से आये अभ्यासी सामान्य साफ–सफाई करने में जुट गए। उन्होंने जमीन से अवाँछित झाड़ियों को हटाया, ईटें एवं निर्माण के दूसरे सामान ढोते हुए गुरुदेव की कॉटेज के सामने वर्षा के पानी के लिये नाले का निर्माण किया। उन्होंने रसोई–घर में और शौचालयों की सफ़ाई में भी मदद की।
- गुजरात से आए स्वयंसेवक जुलाई महीने के प्रथम सप्ताह में इन कामों में जुट गए। वातावरण में परिवर्तन महसूस होने लगा और स्वयंसेवकों में भी आन्तरिक परिवर्तन आने लगा।

- आन्ध्र–प्रदेश के स्वयंसेवक गुरुपूर्णिमा से पहले तिरुपुर आ पहुंचे। सभी अपने–अपने कामों में मग्न हो गए और उत्सव के दौरान गुरुदेव की एक झलक पाने हेतु ध्यान–कक्ष मे भी न आ सके।
- तमिलनाडु के तिरुवण्णमलाई, वेल्लोर, ईरोड और तिरुपूर से आए अभ्यासियों ने पत्थर हटाए और ध्यान कक्ष में कालीन बिछाने तथा मंच के पास झाड़ियों को साफ करने का काम जारी रखा। उस समय वहां जो पूर्ण मौन और आध्यात्मिक दशा पैदा हुई थी, वह अपने–आप में एक अविस्मरणीय अनुभव था।
- कर्नाटक के स्वयंसेवकों ने समारोह के दौरान परिवहन–विभाग को संभाला। उन्होंने उत्सव के एक महीने से भी अधिक पहले से सप्ताहान्त की छुट्टियों में कार्यस्थल पर आने की ठान ली थी और वे भोजन–कक्ष, सुरक्षा, बाल–केन्द्र, पंजीकरण (नाम लिखाना), ध्यान–कक्ष और अन्य क्षेत्रों में काम करते हुए दिखाई दिए।

काम का वातावरण

हरेक चीज़ अपने आप ही घटित होती, पूर्ण होती हुई दिखाई दे रही थी, जैसे के सभी स्वयंसेवक गुरुदेव के हाथ के उपकरण मात्र हों। स्वयंसेवकों ने सादगीभरा जीवन जीने का अर्थ समझा। यद्यपि सभी स्वयंसेवक देश के अलग–अलग प्रदेशों से आए थे, फिर भी उनमें स्नेह–मिलाप और भाईचारे की भावना थी। दिन–रात काम करने के बाद भी उनकी ताकत और उत्साह में कोई कमी नहीं आई।

सहज–पिकनिक, अजमेर–राजस्थान

१० जुलाई २०११ के दिन सत्संग के बाद अज़मेर और किशनगढ के अभ्यासी पिकनिक मनाने पुष्कर गए। लगभग ६० अभ्यासियों ने एक अभ्यासी भाई के फार्म–हाऊस में दिन बिताया। कार्यक्रम की शुरुआत सहजमार्ग के मूलभूत अभ्यास पर परिचर्चात्मक सत्र से हुई। भाइयों और बहनों ने साधना पर अपने–अपने अनुभव बताए। प्रतिभागियों ने महसूस किया कि चर्चा के बाद उनकी बहुत सी शंकाओं का समाधान हो गया। उन्होंने आध्यात्मिक जीवन के अधिक गहरे पहलुओं को समझा। बच्चों ने प्रभावशाली सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का समापन सायंकालीन सत्संग के साथ हुआ।

खंड ४, अंक ५ सितंबर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

युवा कार्यक्रम, कोलकता

१४ और १५ अगस्त को एक दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें १८ से ३० वर्ष की आयु के युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। एक छोटे से परिचयात्मक सत्र के बाद प्रतिभागियों ने आपस में अपने अनुभव बाँटे। विचार–विमर्श के बाद सभी ने यह माना कि सामान्यतः भंडारे से लौटने के बाद अपने आप को बदलने की तीव्र प्रेरणा मिलती है। यह हमारे प्रतिदिन के जीवन में भंडारे के समय के आनन्दपूर्ण तथा ईश्वरीय वातावरण को बनाए रखने की इच्छा से उत्पन्न होता है। इस प्रेरणा को स्थायी परिवर्तन के रूप में बनाये रखना व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है।

शाम के सत्संग के बाद, सभी ने बास्केटबॉल खेला तथा रात्रि के भोजन और एक फिल्म देखने के बाद सत्र समाप्त हुआ।

अगले दिन एक कहानी पर आधारित सत्र रखा गया जिसमें सभी को अच्छे और आनन्दमय के बीच जद्दोजहद के बारे में विचार करना था। साथ ही यह सोचना था कि आनन्द प्राप्त करने की लालसा के क्या कारण हैं तथा अन्त में यह सदा पीड़ा की ही ओर क्यों ले जाता है।

'जीवन के दायरे' नामक सत्र हमारे जीवन के विभिन्न दायरों पर रोशनी डालने में प्रभावकारी साबित हुआ। इन दायरों में हम प्रतिदिन घूमते रहते हैं तथा विभिन्न प्रकार से व्यवहार करते हैं। विभिन्न दलों ने इसे नाटिका के रूप में प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में हँसी–मज़ाक के लिए भी स्थान था। साथ ही इसमें एकीकृत व्यक्तित्व के महत्व पर प्रकाश डाला गया तथा आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को जीवन के हर दायरे में सम्मिलित करने पर ज़ोर दिया गया।

दिन के अन्तिम सत्र में प्रतिभागियों को अपनी साधना में अनियमित्ता के कारणों का मूल्यांकन करना था तथा इन अवरोधों को कैसे पार किया जाए इसका अवलोकन करना था।

पूरे सेमिनार के दौरान सभी प्रतिभागियों को अपनी साधना पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया गया तथा दैनिक जीवन में व्यक्तिगत अनुशासन के महत्व पर भी ज़ोर दिया गया।

युवा गोष्ठी – गाजियाबाद

१० जून २०११ को गाजियाबाद में एक युवा–गोष्ठी का आयोजन किया गया। लगभग ५० अभ्यासियों ने वर्तमान गुरु की भूमिका तथा आवश्यकता पर विचार–विमर्श किया। हमारे गुरुदेवों के विषय में विभिन्न तथ्य तथा मिशन का इतिहास प्रस्तुत किया गया। सहज मार्ग की सही साधना, विशेषकर सफाई पर गहराई से विचार किया गया। स्वयं–सेवा के महत्व तथा उसे करने के तरीके पर एक प्रभावी प्रस्तुतिकरण दिया गया। स्थायी रूप से आश्रम के संचालन के लिए स्वयं–सेवा की आवश्यकता वाले क्षेत्रों पर विचार किया गया। आश्रम के संचालन में अपनी भूमिका को समझते हुए युवाओं ने अपनी सेवाएँ नियमित रूप से प्रदान करने की स्वेच्छा जताई।

एकोज़ समाचार–पत्र पर प्रश्नोत्तरी

१५ अगस्त २०११ को जामनगर, गुजरात में एकोज़ समाचार–पत्र पर आधारित एक प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता आयोजित की गई। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर ३० मिनिट के अन्दर देने थे। सहभागिता को प्रभावकारी बनाने के लिए प्रतियोगिता से पहले प्रतिभागियों को २० मिनिट के लिए एकोज़ समाचार–पत्र पढ़ने के लिए दिया गया। इस प्रतियोगिता में लगभग २० अभ्यासियों ने भाग लिया। हर सही उत्तर के लिए ५ अंक प्रदान किए गए तथा हर गलत उत्तर के लिए ५ अंक काटे गए। भाई अनुज और भाई ए. आर. छत्तरीवाला को क्रमशः प्रथम तथा द्वितीय पुरस्कार मिला। यह पहल अधिक से अधिक अभ्यासियों को समाचार–पत्र पढ़ने की प्रेरणा देने के लिए की गई। समाचार–पत्र के विशेष अंक में तिरुपूर भंडारा के वृतांत की सभी ने प्रशंसा की।

खंड ४, अंक ५ सितंबर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

प्रकाश का केन्द्र

तिनसुकिया आश्रम, असम

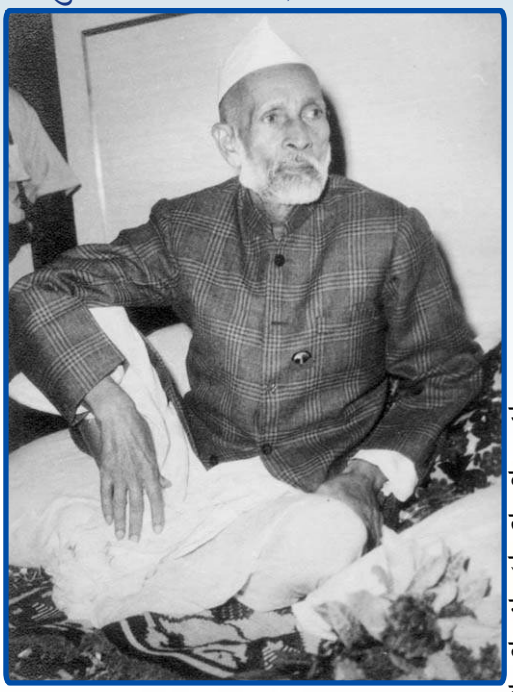

आरम्भ

तिनसुकिया, यद्यपि एक छोटा आश्रम है, लेकिन देश मे तीसरा सबसे पुराना आश्रम है। तिनसुकिया को, जोकि गुवाहाटी से ४८० कि.मी. दूर है तथा निकटतम हवाई अड्डे दिब्रूगढ से एक घन्टे की दूरी पर है, असम की व्यवसायिक राजधानी के नाम से जाना जाता है तथा यहाँ पर असामी, बंगाली और हिन्दी बोलने वालों की मिश्रित जनसंख्या है।

स्वर्गीय भाई काशीराम अग्रवाल, मिशन के भूतपूर्व संयुक्त सचिव, तिनसुकिया में प्रथम अभ्यासी थे। जैसे जैसे अभ्यासियों की संख्या बढती गई, केन्द्र के अभ्यासियों ने शहर के बीचों–बीच ३५०० वर्ग फीट के एक पुराने गोदाम को खरीद लिया जिसके चारों तरफ ४००० वर्ग फीट की खुली जगह भी है। आश्रम मुख्य बस अड्डे से सिर्फ एक पत्थर फेंकने के बराबर की दूरी पर है तथा रेलवे स्टेशन से लगभग ३ कि.मी. दूर है।

बाबूजी महाराज का पथप्रदर्शक कार्य

बाबूजी महाराज सन् १९६१ में तिनसुकिया गये। उन दिनों भारत के इस उत्तर पूर्वी क्षेत्र में पहुँचने के लिये वे रेलगाड़ी से यात्रा करते थे तथा एक नाव के द्वारा ब्रह्मपुत्र नदी को पार किया करते थे। १९६१ के बाद वे १९६५, १९६८, १९६९, १९७०,१९७१, १९७३, १९७५ और १९७७ में वे तिनसुकिया गये।

बाबूजी ने २५ नवम्बर १९७७ को आश्रम का उद्घाटन किया जिसमें देश के सभी भागों के अभ्यासियों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा, "यह भी ठीक है कि सहज मार्ग पद्धति मे प्राणाहुति की सुगंध निरन्तर मिलती रहती है लेकिन जो चीज पीछे छोड़ दी जाती है– वह है प्रेम और भक्ति। ध्यान की क्रिया के साथ इनका उसमे अन्तर्निहित होना आवश्यक है। इन चीजों को साथ–साथ होना चाहिये –इस बात पर आज मुझे जोर देना पड़ रहा है क्योंकि इससे अभ्यासी को अपने लक्ष्य तक पहुँचने मे मदद मिलेगी।"

चारीजी महाराज ने १९८५, १९८६ और २००२ में इस केन्द्र का दौरा किया। २००२ में उनके तिनसुकिया और डिगबोइ के भ्रमण के दौरान, भारत एवं विदेश के ७०० से अधिक अभ्यासियों ने इस केन्द्र का दौरा किया। तिनसुकिया आश्रम की रजत जयंती २५ नवम्बर २००२ को आयोजित की गयी जिसमें असम और उत्तर–पूर्व के लगभग २०० अभ्यासियों ने हिस्सा लिया।

नवीनीकरण

यह आश्रम एक मंजिला आर.सी.सी. ईमारत हुआ करती थी जिसमें गुरुदेव का कक्ष, रसोई और भोजन कक्ष तथा एक सुन्दर बगीचे के साथ बड़ी हरियाली वाला क्षेत्र था। गुरुदेव की अनुमति के बाद एक और मंजिल का निर्माण एवं आश्रम का नवीनीकरण किया गया। स्वयं–सेवकों के निरन्तर प्रयासों एवं अभ्यासियों के योगदानों ने १८ महीने में काम पूरा करने में मदद की।

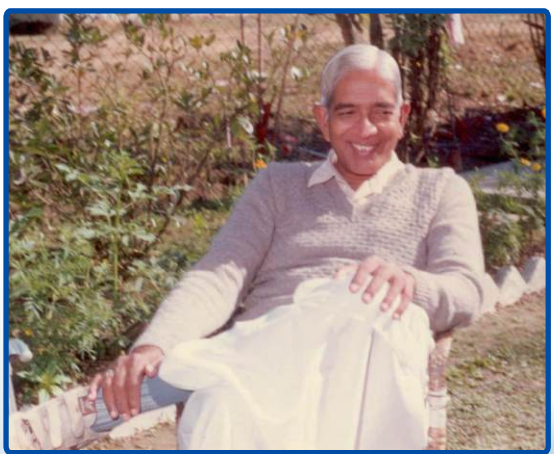

खंड ४, अंक ५ सितंबर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

इन प्रयासों की फल प्राप्ति के रूप में पहिली मंजिल पर एक सुंदर, हवादार, बिना एक भी खंबे के, ३६०० चौ.फ़ीट का ध्यान केंद्र तैयार हुआ। पुज्य गुरुदेव की अनुमति से २ फ़रवरी २०११ से इस कक्ष का प्रयोग शुरु हो गया।

गतिविधियाँ

आजकल करीब १२५ अभ्यासी रविवार के सतसंग में उपस्थित होते हैं। तिनसुकिया केंद्र में युवकों की गतिविधियाँ उत्तरोत्तर बढ़ रही हैं। आश्रम को सिर्फ तिनसुकिया केंद्र के लिये ही नहीं बल्कि उपकेंद्रों की भी विभिन्न गतिविधियों जैसे अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम, जन–सभा इत्यादि के लिए उपयोग में लाया जाता है। आश्रम उत्तर–पूर्व प्रांतों के अभ्यासी पहचान–पत्र, प्रकाशन वितरण एवं अभ्यासी उपस्थिति के दस्तावेजों से संबंधित कार्यों को भी संभालता है।

इस केंद्र ने उत्तर–पूर्व प्रांतों में मिशन की उन्नति में एक उछाल दिया है और दिगबोई, दोमदुमा, नहरकाटिया, दिब्रूगढ, सिबसागर, जोरहर, नज़ीरा, दुलियाजान, जागुन और उत्तर लखीमपुर जैसे उपकेंद्र इसके पश्चात अस्तित्व में आये हैं।

छोटा आश्रम होने के बावजूद तिनसुकिया ने उत्तर–पूर्व भारत में मिशन की वृद्धि में एक मुख्य स्तंभ के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रशिक्षक यात्रा कार्यक्रम – दक्षिण कर्नाटक

२५ और २६ जून को, दक्षिण कर्नाटक के सभी केंद्रों में दो दिवसीय प्रशिक्षक यात्रा कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम के अंतर्गत व्यक्तिगत–सिटिंग, गृह–सभाएं एवं रविवार के पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया था ।

इस कार्यक्रम को ३२ केंद्रों में, स्वयं–सेवकों एवं ५८ प्रशिक्षकों की मदद से संचालित किया गया । कुल मिलाकर २५ जून को ३० गृह–सभाएं आयोजित की गयी । साधना के विभिन्न पहलुओं पर विचार–विमर्श किया गया एवं विस्तार से समझाया गया । कई लोगों ने अभ्यास शुरू करने में रुचि दिखायी ।

२६ जून का पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम, भंढारे की तैयारी के बारे में चर्चा से आरंभ हुआ तथा इसके बाद प्रश्नोत्तर सत्र रखा गया । "उठो और बोलो" सत्र में अभ्यासियों की उत्साहवर्धक भागीदारी देखने को मिली।

इस पहल का स्वागत किया गया एवं सराहा गया और सभी भागीदारों ने अपनी खुशी ज़ाहिर की कि उन्हें प्रशिक्षकों के साथ संदेह निवारण का अवसर मिला।

अभ्यासी स्वयंसेवकों की निष्ठा एवं प्रतिबद्धता ने इस कार्यक्रम को सफल बनाया ।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2011 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. “Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", “SRCM”, “Constant Remembrance” and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.